S-0 Roll No. ……………………..

PJ–101

खगोलीय परिचय एवं फलित ज्योतिष हेतु आरंभिक गणित

फलित ज्योतिष में डिप्लोमा / प्रमाणपत्र (डी. पी. जे. सी. पी. जे.-12 / 16 / 17)

प्रथम सेमेस्टर, सत्र 2018

समय : 3 घण्टा पूर्णांक : 80

नोट : यह प्रश्न पत्र अस्सी (80) अंकों का है जो तीन (03) खण्डों 'क', 'ख' तथा 'ग' में विभाजित है। शिक्षार्थियों को इन खण्डों में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

खण्ड–क

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड 'क' में चार (04) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के लिए उन्नीस (19) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल दो (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. स्वकल्पित उदाहरण के द्वारा विंशोत्तरी दशा एवं अन्तर्दशा का वर्णन कीजिए।

2. पञ्चाङ्ग किसे कहते हैं ? पञ्चाङ्ग के विविध अङ्गों का विस्तृत वर्णन कीजिए।

3. षोडश वर्ग कौन-से हैं ? नवमांश व द्वादशांश का सोदाहरण वर्णन कीजिए।
4. प्राचीन भारतीय काल गणना के विषय में एक विस्तृत निबन्ध लिखिये।

खण्ड–ख

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के लिए आठ (08) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल चार (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. इष्टकाल की विधि का सोदाहरण वर्णन कीजिए।
2. राशि व नक्षत्रों के सम्बन्ध का विवेचन कीजिए।
3. त्रिशांश साधन विधि का सोदाहरण प्रतिपादन कीजिए।
4. सोदाहरण ग्रहस्पष्ट साधन विधि का विवेचन कीजिए।
5. भारतीय प्राचीन खगोलशास्त्र का परिचय प्रदान कीजिए।
6. योगिनी दशासाधन की विधि का वर्णन कीजिए।
7. सप्तांश साधन का सोदाहरण वर्णन कीजिए।
8. द्रेष्काण व षष्ट्यंश साधन की प्रक्रिया का सोदाहरण वर्णन कीजिए।

खण्ड–ग

(वस्तुनिष्ठ प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ग' में दस (10) वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिये गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के लिए एक (01) अंक निर्धारित है। इस खण्ड के सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

सही विकल्प का चयन कीजिए :

1. एक राशि में चरण होते हैं :

   (अ) 10

   (ब) 20

   (स) 09

   (द) 04

2. विंशोत्तरी महादशा में शुक्र के दशावर्ष होते हैं :

   (अ) 20

   (ब) 16

   (स) 10

   (द) 7

3. एक घटी में पलों की संख्या होती है :

   (अ) 100

   (ब) 24

   (स) 30

   (द) 60

4. मकर राशि का स्वामी ग्रह है :

   (अ) सूर्य

   (ब) चन्द्र

   (स) शनि

   (द) गुरु

5. एक द्रेष्काण का मान होता है :

(अ) 10°

(ब) 15°

(स) 2°/30′

(द) 5°

6. विंशोत्तरी महादशा में किस नक्षत्र से गणना प्रारम्भ होती है ?

(अ) आर्द्रा

(ब) कृत्तिका

(स) पुनर्वसु

(द) रोहिणी

7. विष्कुम्भादि योगों की कुल संख्या है :

(अ) 28

(ब) 30

(स) 27

(द) 20

8. एक नवमांश का मान होता है :

(अ) 10°

(ब) 2°/30′

(स) 15°

(द) 3°/20′

9. पंचांगों में सम्मिलित नहीं है :

(अ) तिथि

(ब) वार

(स) राशि

(द) करण

10. स्थिर करणों की संख्या होती है :

(अ) 10

(ब) 7

(स) 5

(द) 4